Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 26-11-2022, Accepted: 12-12-2022, Published: 28-12-2022
Volume 3, Issue 2, 2022, Page No. 10-12

सनातन धर्म, हिन्दुइस्म और हिंदुत्वः एक विश्लेषणात्मक टिप्पणी

डॉ अनुराग पांडेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्विद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत लेख वर्तमान भारत में व्याप्त हिन्दुइस्म, हिंदुत्व और सनातन धर्म पर उठे वाद–विवाद की पड़ताल करता है। लेख इन तीनों विषयों की परिभाषा देता है और ये जानने का प्रयास करता है के क्या वाकई भारत में निवास करने वाले हिन्दुओं को हिन्दू कहना उचित होगा? या सनातनी अथवा वैदिक धर्म के मानने वाले? इस सम्बन्ध लेख इतिहास और धर्म ग्रंथो की व्याख्या भी प्रस्तुत करता है। इसी के साथ लेख ये विश्लेषण भी करता है के कैसे हिंदुत्व हिन्दुइस्म से निकला हुआ दर्शन है जिसे वीर सावरकर ने अपनी कृति "हिंदुत्वरू हिन्दू कौन है" में कलमबद्ध किया है। सावरकर के हिंदुत्व के सिद्धांत से जुडी हुई भ्रांतियों का विश्लेषण भी ये लेख प्रस्तुत करता है।

मूल शब्दः हिन्दुइस्म, हिंदुत्व, सनातन धर्म, वैदिक धर्म, पुण्य भूमि, पितृ भूमि, भौगोलिक एकता, राष्ट्र दर्शन

प्रस्तावना
भारत में मुख्य रूप से एक धर्म विशेष को लेकर तीन तरह की शब्दावली प्रचलन में रहीं हैं, एक जो सर्वविदित है, हिन्दुइस्म,, दूसरा हिंदुत्व और तीसरा सनातन धर्म। इन तीनों शब्दावलियों में हिन्दुइस्म हिन्दू धर्म का अंग्रेजी रूपांतरण है। हिंदू शब्द संस्कृत शब्द सिंधु से लिया गया है जो सिंधु नदी का स्थानीय नाम है जो भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी भाग से होकर बहती है। सिंधु का अर्थ समुद्र भी होता है। हिंदू या इंदु शब्द का प्रयोग यूनानियों द्वारा देश और सिंधु नदी के पार रहने वाले लोगों को दर्शाने के लिए किया गया था। मेगस्थनीज की श्इंडिकाश चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास भारत और भारतीयों के लिए इसी नाम का प्रयोग करती है। यह शब्द केवल यूनानियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नाम का एक विस्तार मात्र था। और इसी वजह से अरबी शब्द अल–हिंद या (सिंधु), सिंधु नदी के पार रहने वाले लोगों की भूमि को संदर्भित करता है। 13 वीं शताब्दी तक, हिंदुस्तान शब्द का उपयोग भारत के लिए एक लोकप्रिय वैकल्पिक नाम के रूप में किया जाने लगा, जिसका अर्थ है षसिंधु की भूमिष्। अब क्योंकि अरबी, यूनानी भाषा में 'स' को 'ह' पुकारा जाता है इसलिए सिंधु हिन्दू बन गया और 18वीं शताब्दी के अंत तक ये इतना प्रचलित हुआ के यूरोपीय व्यापारियों और उपनिवेशवादियों ने सामूहिक रूप से हिंदुस्तान में हिन्दू शब्द को धार्मिक धर्मों के अनुयायियों के आधार पर संदर्भित किया। ये सभी अनुयायी भौगोलिक रूप से उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों को संदर्भित करने लगे, जिन्हे हिन्दू कहा जाने लगा। कुल मिलाकर शुरूआतीदौर में हिन्दू शब्द सिर्फ भौगोलिक एकता को रुपित करता है। कालांतर में भारतीय मूल का कोई भी व्यक्ति जो अब्राहमिक धर्मों का पालन नहीं करता था, हिंदू के रूप में जाना जाने लगा, जिससे धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल हो गई। जिनमें वेद, पुराण, पूजा पद्धति, तीज–त्यौहार इत्यादि हिन्दू कहे जाने लगे। हालाँकि इस विवेचना से स्पष्ट है के हिन्दू सिर्फ एक भौगोलिक इकाई या क्षेत्र को ही संदर्भित करता है, धार्मिक पहचान को नहीं। दूसरी तरफ, हिन्दू शब्द के साथ इज्म जब लगता है तब ये धार्मिक आचरण या व्यवहार को प्रदर्शित नहीं करता, इज्म का अर्थ वाद है, जैसे कैपिटलिज्म, सोशलिज्म, कम्युनिज्म, लिबरलिज़्म इत्यादि और कोई भी धर्म सिर्फ वाद या विचार नहीं होता। इसलिए हिन्दुइज़्म धर्म को व्याख्या नहीं करता बल्कि आचरण की व्याख्या करता है।

सनातन धर्म
वहीं दूसरी ओर सनातन धर्म प्रयोगधर्मी है और प्रयोगधर्मिता के कारण भारत एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला है. पूरी दुनिया में राजनीतिक लोकतंत्र हैं, सामाजिक लोकतंत्र हैं लेकिन सिर्फ़ भारत में आध्यात्मिक लोकतंत्र इसी सनातन धर्म के कारण है। इसके साथ भारत में आध्यात्मिक बहुलवाद भी है, सनातन धर्म बहुलता को प्रेरित करता है और इसी कारण एक सनातनी सभी वस्तुओं, प्रकृति, मनुष्य जीव–जंतु में अपने इष्ट की छाया देखता है। साथ ही साथ ये सनातन धर्म ही है जो सभी धर्मों का सम्मान करता है, वाद विवाद करता है और किसी भी धर्म की अवधारणा को चुनौती दे सकता है जैसे सभी सनातनी शंकराचार्य, मठाधीश, पूजनीय व्यक्ति अथवा भगवान के अस्तित्व के प्रकार को भी चुनौती दे सकता है। ऐसा इसलिए सम्भव है क्योंकि सनातन धर्म किसी भी को भी अंतिम शब्द, वाक्य नहीं मानता। एक तरफ सनातन धर्म में सांस्कृतिक, धार्मिक ऋषि–मुनि हुए जिन्होंने तप के बल पर अपने इष्ट को अथवा ज्ञान को प्राप्त किया, वहीं दूसरी ओर इसी सनातनी धर्म में कई शाखाएं भी हुईं जिनमें वैष्णववाद, शैववाद, शक्तिवाद, प्रमुख हैं। सनातन दर्शन कई भागों में विद्यमान है जिनमें सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत और भौतिकवादी दर्शन अथवा पदार्थवाद मुख्य दर्शन हैं। इस प्रकार सनातन धर्म समावेशी प्रवृत्ति को अपनाता है और दुसरे धर्म या मान्यताओं में अविश्वास या उनकी आलोचना नहीं करता, बल्कि सभी मतों का सम्मान करता है। अतः भारत या किसी अन्य देश में निवास करने वाले लोग जिन्हें हिन्दू कहा जा रहा है वो धार्मिक पुस्तकों के नजरिए से सनातनी हैं। हिन्दू की जगह सनातनी ज्यादा सारगर्भित और धर्म की असली व्याख्या प्रस्तुत करता है।

सनातन धर्म का उल्लेख कई धर्म ग्रंथों और कथाओं में मिलता है, उदाहरण स्वरूप, जब सावित्री के पति सत्यवान की मृत्यु हुई तब वो भगवान यमराज के पीछे चलने लगीं, एक छोर आने के पश्चात भगवान यमराज ने सावित्री से कहा के इसके आगे आप नहीं जा सकतीं और लौट जाने का आग्रह किया, तब सावित्री ने कहा के जहाँ तक मेरा पति जाए या उन्हें ले जाया जाए, मेरा उनके साथ जाना ही सनातन धर्म है। इस वार्तालाप से दो प्रमुख बातें सामने आतीं हैं, क्योंकि भगवान यमराज सावित्री के पति का शरीर नहीं आत्मा ले जा रहे थे इसलिए सनातन धर्म में शरीर से ज्यादा आत्मा का मूल्य होता है और व्यक्ति को आत्म–चिंतन, और आत्मा को शुद्ध रखने की सलाह दी जाती है, दूसरा सावित्री हिन्दू शब्द का प्रयोग नहीं कर रहीं, वो सनातन धर्म में पत्नी के कर्तव्य भगवान यमराज को बता रहीं हैं। दूसरा उदाहरण– सुग्रीव–बाली युद्ध के दौरान जब श्री राम ने बाली वध किया और बाली ने वध का कारण जानना चाहा तब श्री राम ने बाली को कहा के श्तुम अपने भाई की पत्नी के साथ दुष्कर्म किया जो सनातन धर्म का अपमान है, यहाँ श्री राम भी हिन्दू धर्म शब्द का प्रयोग नहीं कर रहे। तीसरे, जब महाभारत की कुरु सभा में द्रोपदी का चीरहरण हो रहा था तब द्रोपदी कहती हैं के मैने सुना था के धर्म का आचरण करने वाली स्त्रियां कभी भी सभा में नहीं बुलाई जातीं हैं, आज सनातन धर्म का कुरु वंश में नाश हो गया है, इस तरह से कई उदाहरण मौजूद हैं जो सनातन शब्द का प्रयोग करते नजर आते हैं। यहाँ ये तथ्य जानना भी जरूरी है के सनातन धर्म का उल्लेख महाभारत में 157 बार, रामायण में 8 बार, भगवत पुराण में 8 बार, बृह्म पुराण में 7 बार और गरुण पुराण में 4 बार आता है, पर हिन्दू शब्द रामायण, महाभारत, वेद, पुराण इत्यादि में एक बार भी नहीं आता, इससे ये ज्ञात होता है के जिन्हे आज हिन्दू कहा जा रहा है वो धर्म ग्रंथों के हिसाब से सनातनी हैं और हिन्दू केवल सिंधु नदी के किनारे होने के कारण केवल सनातनियों की एक भौगोलिक पहचान मात्र है। सनातन धर्म के मानने वाले संसार (जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म का निरंतर चक्र) और कर्म (कारण और प्रभाव का सार्वभौमिक नियम) के सिद्धांतों में विश्वास करते हैं। सनातन धर्म के प्रमुख विचारों में से एक ष्आत्मानष् या आत्मा में विश्वास है। यह दर्शन मानता है कि जीवित प्राणियों में एक आत्मा होती है, और वे सभी सर्वोच्च आत्मा के अंश हैं। सनातन धर्म को धार्मिक और भौगोलिक दोनों पहचानों पर गर्व है और ये गर्व ही इन्हे समावेशी बनाता है। एक सनातनी भारतीय किसी को भी अंतिम शब्द या अंतिम व्यक्ति नहीं मानते हैं. ये आध्यात्मिक बहुलवाद सिर्फ़ सनातनियों के मध्य में है। बाक़ी कहीं भी किसी धार्मिक समुदाय के बीच में ये देखने को नहीं मिलता है। इसके साथ ही सनातन होने का अर्थ दुसरे धर्म का विरोधी या पूजा पद्धति को नकारने वाला नहीं है, क्योंकि सनातन धर्म नफरत नहीं सिखाता।

सनातन धर्म की तुलना एकरूपतावादी धर्मों से नहीं की जा सकती। यहाँ विविधता और विविधता का सम्मान ज्यादा नजर आता है। उदाहरण के लिए, मेघालय के खासी या झारखंड के मुंडा आदिवासी जो तौर–तरीक़े अपनाते हैं, वो गंगा–यमुना के मैदानी इलाक़ों के लोग नहीं अपनाते,या उन तौर त्रिकोण के बारे में जानते तक नहीं लेकिन अपनी विविधताओं के साथ और समावेशी प्रवृत्ति के कारण ये सब सनातनी हाँ हिंदू ही हैं। इन सभी के रीती रिवाजों, त्योहारों, पूजा–पद्धति, ग्राम–देवता अथवा देवी, परंपराओं, दृष्टिकोणों, नैतिक मूल्यों और अध्यात्म में अंतर है, फिर भी ये सभी एक मला में पिरोए मोती हैं जिन्हें सनातन धर्म का धागा आपस में बांधे रखता है।

जब विभिन्न प्रथाओं की बात आती है तब वहां भी सनातन धर्म समावेशी होता है, जैसे,राजस्थान का मीणा समुदाय ये समुदाय सनातनी रीतिरिवाज से प्रायः शादी या किसी मांगलिक कार्य को करते हैं, लेकिन जब एक मामला आया जिसमें पति पत्नी से तलाक चाहता था और वो कोर्ट गया तो उसकी पत्नी ने ये बोलकर तलाक देने से मना कर दिया के जिस समुदाय से वो आते हैं वहाँ तलाक का कोई प्रावधान ही नहीं है। और न्यायालय ने इस दलील को स्वीकार करते हुए महिला के पक्ष में फैसला दिया इसके साथ ही साथ राजस्थान और दिल्ली उच्च न्यायालय ने समान नागरिक संहिता बनाने और लागू करने का निर्देश संसद को दिया। राजस्थान के मीणा समुदाय की ये प्रथा किसी अन्य भारतीय राज्य या सनातनी समुदाय में नहीं है। सनातन धर्म में हर हर प्रथा का सम्मान किया जाता है।

हिंदुत्व और वीर सावरकर

सावरकर की किताब की बात करें तो वो हिन्दू धर्म और हिंदुत्व में अंतर करते हैं, उन्होंने हिंदुत्व को एक एथिनक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विचार माना हैं। सावरकर ने हिंदू होने की गुणवत्ता का वर्णन करने के लिए हिंदुत्व शब्द का इस्तेमाल किया। सावरकर ने हिंदू धर्म को एक जातीय, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान के रूप में माना। सावरकर के अनुसार, हिंदू वे हैं जो भारत को ऐसी भूमि मानते हैं जिसमें उनके पूर्वज रहते थे, साथ ही वह भूमि जिसमें उनके धर्म की उत्पत्ति हुई थी।,सावरकर अपनी हिंदुत्व की अवधारणा में पुण्य भूमि और पितृ भूमि की बात करते हैं और कहते हैं के पितृभूमि का सीधा अर्थ है वो भूमि जो हमारे पूर्वजों से हमें मिली है, मतलब पूरा भारतवर्ष। और ये बात सभी धर्म, मत इत्यादि पर लागू होती है। पुण्यभूमि के मामले में सावरकर धर्म स्थापना भूमि को वरीयता देते हैं। और पितृभूमि में उस भूमि का वर्णन करते हैं जहाँ व्यक्ति या किसी समुदाय का जन्म हुआ है, सावरकर कहते हैं के–

"हम हिंदू एक साथ न केवल उस प्रेम के बंधन से बंधे हैं जो हम एक सामान्य पितृभूमि के लिए रखते हैं और सामान्य रक्त से जो हमारी नसों के माध्यम से बहता है और हमारे दिलों में धड़कता है, हमारे स्नेह को जीवंत रखता है, बल्कि हम आम श्रद्धा के बंधन से भी बंधे हैं।"

अतः सावरकर हिन्दू शब्द में सभी भारतीय धर्मों को शामिल करते हैं और पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैले श्अखंड भारतश को अपने हिन्दू राष्ट्र के सिद्धांत में रेखांकित करते हैं।

अतः अपने लेख में सावरकर हिन्दू को एक भौगोलिक इकाई के रूप में देखते हैं, अर्थात सिंधु नदी के पास बसे विभिन्न मतों को मानने वाले समूह या समुदाय। सावरकर कहीं भी सनातन धर्म की बात नहीं करते और ना ही भारत को सनातन राष्ट्र बनाना चाहते हैं, बल्कि उनका सारा विश्लेषण हिन्दू होने या ना होने पर है। हिन्दू होना या ना होना सिर्फ भौगोलिक इकाई या एकता को प्रदर्शित करता है, धार्मिक पहचान को नहीं। आगे वो बताते हैं के हिन्दू कौन हैं? सावरकर का मानना है के जो भी समुदाय इस देश में जन्मा और इस देश का धर्म है वो हिन्दू है, और ये सभी हिंदुत्व दर्शन के अंग हैं, जैसे बौद्ध, जैन, सिक्ख। इस प्रकार हिंदुत्व का अंग बनने की इकाई के रूप में सावरकर पुण्य भूमि एवं पितृ भूमि की वकालत करते हैं ताकि हिंदुत्व भारत राष्ट्र का दर्शन और विचार बन सके और सभी मत एवं धर्मावलंबी एक साथ रहकर राष्ट्र निर्माण का सपना सफल बनाएं।

जैसा कि ऊपर कहा गया है के सावरकर का हिंदुत्व हिन्दुइस्म से बना है और हिंदुत्व एक दर्शन है जिसमें भौगोलिक पहचान शामिल है और इसी भौगोलिक पहचान को आत्मसात करने से अखंड भारत का निर्माण होता है अतः भारत में निवास करने वाले सभी मत, धर्म, सम्प्रदाय विभिन्न भेदभाव के रहते हुए भी इसी भौगोलिक एकता (हिंदुत्व) के अंग हैं। सावरकर के हिंदुत्व में दो तत्व आते हैं एक पुण्य भूमि एवं दूसरा पितृ भूमि और इसी क्रम में कई वामपंथी आलोचक सावरकर के पुण्य भूमि और पितृ भूमि के सिद्धांत की आलोचना करते हैं और ये देखा गया है के एक तरफ यही विचारक हिन्दुइस्म को एक भौगोलिक पहचान के रूप में देखते हैं वहीं दूसरी ओर इस मिथक को तोड़ने का प्रयास नहीं करते के हिन्दुइस्म धर्म ना होकर एक भौगोलिक इकाई है एक वाद–विचार है और असलियत में बहुसंख्यक समुदाय का धर्म सनातन या वैदिक धर्म है। इस तरह के प्रचलित मिथक को भारतीय राजनीतिक दलों ने और वामपंथी विचारकों ने बनाए रखा और एक सामान्य सनातनी अपने को हिन्दू समझने लगा, जबकि वास्तिवकता ये है के जो भी सिंधु नदी के पास का निवासी है उसे भौगोलिक समरसता और साझा संस्कृति के कारण हिन्दू कहा जाएगा।

अंत में सावरकर के जिस पुण्य भूमि और पितृ भूमि की सर्वाधिक आलोचना वामपंथ करता है उसी सिद्धांत में एकता और भाईचारा निहित है ताकि एक श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण किया जा सके। सावरकर किसी भी धर्म या सम्प्रदाय को अपने हिंदुत्व के विचारों से बहार नहीं करते बल्कि समाहित करते हैं। जो सनातनी हैं उनकी पुण्य और पितृ दोनों भूमि प्राकृतिक रूप से भारतवर्ष ही होगी, और जिनकी पुण्य भूमि किसी और देश में है और पितृ भूमि भारतवर्ष है वो सभी पितृभूमि होने के कारण भारतीय हैं। अतः सावरकर के अनुसार मुस्लिम, क्रिस्चियन, पारसी इस देश के धर्म नहीं हैं, इनका जन्म विदेशी धरती पर हुआ है और सनातन धर्म की समावेशी प्रवृत्ति के कारण ये धर्म भारत में भी मौजूद हैं। क्योंकि ये धर्म विदेशी धरती पर जन्म लिए तो इनकी पुण्य भूमि भारत नहीं हो सकती, वो येरुशलम, मक्का इत्यादि होगी, लेकिन इन सभी धर्म और सम्प्रदायों की पितृभूमि भारत हो सकती है, क्योंकि इनके पूर्वज भारतीय थे। अतः ये सभी धर्म भौगोलिक रूप से हिंदुत्व में शामिल होकर एक मजबूत और भेदभाव रहित राष्ट्र का निर्माण करेंगे। पितृभूमि का सिद्धांत सिर्फ मुस्लिम, क्रिस्चियन या पारसी धर्मों ही लागू नहीं होता, सूक्ष्म पड़ताल करने पर ये ज्ञात होता है के अगर कोई सनातनी की भी पुण्य भूमि भारत नहीं है तब ऐसी स्थिति में ऐसे किसी भी सनातनी को हिंदुत्व के सिद्धांत में शामिल होने के लिए पितृभूमि का ही रास्ता चुनना होगा। उदाहरणस्वरूप मान लीजिए के अगर किसी हिन्दू की पुण्य भूमि नेपाल का पशुपतिनाथ मंदिर है, तो ऐसे हिन्दू भी सिर्फ पितृभूमि की वजह से भारतीय माने जाएंगे। अंततः सावरकर का हिंदुत्व का सिद्धांत सभी को समावेशित करता है ताकि एक वैचारिक रूप से सुदृण राष्ट्र का निर्माण हो सके।

संदर्भ सूची

1. दयानन्द भारती (2019). अंडरस्टेंडिंग हिंदूइस्म (न्यू डेल्हीरू मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स)
2. R. K Panda. Hinduism in India (New Delhi: Bhartiya Kala Prakashan), 2014.
3. शकुंतला जगन्नाथन (2000) हिंदूइस्मः एन इंट्रोडक्शन (मुंबईः वकील्स फेफर एंड साइमन्स)
4. फिलिप एच एश्बी (1974). मॉडर्न ट्रेंड इन हिंदूइस्म (कोलंबियाः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस)
5. मनीषा बासु (2016). द रेह्टोरिक ऑफ हिन्दू इंडियाः लैंग्वेज एंड अर्बन नॅशनलिज़्म (कैंब्रिजः कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).
6. पीटर ल्योन (2008). कन्फ्लिक्ट बिटविन इंडिया एंड पाकिस्तानः एन इंसाइक्लोपीडिया (ए बी सी–CLIO: सांता बारबरा सी/ए).
7. क्रिस्टोफी जेफ़रीलो (2007). द संघ परिवारः ए रीडर (न्यू डेल्हीः ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).
8. थॉमस ब्लॉम हेनसन (1996). द सेफ्रॉन वेवः डेमोक्रेसी एंड हिन्दू नॅशनलिस्म इन मॉडर्न इंडिया (न्यू जर्सीः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस).
9. क्रिस्टोफी जेफ़रीलो (2007). हिन्दू नेशनलिस्मः ए रीडर (न्यू जर्सीः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस).
10. तपन बासु एवं अन्य (1993). खाकी शॉर्ट्स, सेफ्रॉन फ्लैगः ट्रैक्ट्स ऑफ़ द टाइम (न्यू डेल्हीः ओरिएंट ब्लैकस्वान).
11. Rajarajan RKK. "Drāviḍian@Tamil Concept of Religion is sanātanadharma a Religion?,". Into the Nuances of Culture. Essays on Culture Studies. (January), 2020. Accessed Via: https://www.academia.edu/44450087. Dated. 12/1/2021.
12. Lester R. Kurtz. Gods in the Global Village: The World's Religions in Sociological Perspective (Thousand Oaks. USA. Sage Publications), 2007, 49-52.
13. Dharma (Part 1). "Sanatana-Dharma"] Accessed Via: https://iskconeducationalservices.org/HoH/concepts/key-concepts/sanatana-dharma/. Dated. 12/1/2021.
14. "In Rajasthan] tribal body acts as family court for ST couples]" India News. (July. 9. 2019)- Accessed Via: https://www.hindustantimes.com/india-news/in-rajasthan-a-tribal-organization-not-courts-gives-divorce-decrees/story-kAU0nQnORMI5O80aVMeMdJ.html. Dated. 15/10/2020
15. Vinayak Damodar Savarkar. "Hindutva: Who is a Hindu?" Accessed Via: https://www.culturism.us/booksummaries/Hindutva-20Who-20is-20a-20Hindu4Posting.pdf. Dated. 16/10/2020.
16. Saket Suryesh. "Veer Savarkar, Hinduism, Hindutva and the ^liberal* strawman arguments," (January.4). OPINDIA, 2022. Accessed Via: https://www.opindia.com/2022/01/veer-savarkar-hinduism-hindutva-liberal-strawman-arguments/. Dated. 10/6/2022.
17. Swapan Dasgupta (2021). "From the Archives: V.D. Savarkar and M.S. Golwalkar: The Modernist and the Guru" India Today- (November) 17). Accessed Via: https://www.indiatoday.in/india-today-insight/story/from-the-archives-how-veer-savarkar-laid-the-foundation-of-contemporary-hindu-nationalism-1877276-2021-11-17. Dated. 10/6/2021.
18. Kothari, Rajni (1989), "Cultural ConteÛt of Communalism in India," Economic and Political Weekly, (January 14).
19. Joseph S Alter. "Somatic Nationalism: Indian Wrestling and Militant Hinduism" Modern Asian Studies,2022:28(3):576-77.